भाकृअनुप – केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान
श्री गंगानगर राजमार्ग, बीछवाल, बीकानेर-334 006 (राज)
ICAR-CENTRAL INSTITUTE FOR ARID HORTICULTURE
Sri Ganganagar Highway, Beechwal-BIKANER-334 006
e-mail- *ciah@nic.in, www.ciah.icar.gov.in.* Phone-0151-2250960 : Fax-2250145

एडवाईजरी-III, 2021

दिनांक 25.05.2021

शुष्क बागवानी उत्पादन संबंधित किसानो को सलाह

1. इस समय नौत्तपा व गर्म हवा चलाने के कारण वातावरण का तापमान बढ़ने की संभावना है। इसीलिए किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि अपनी बागवानी फसलों को भीषण गर्मी से बचाने के लिए समय-समय पर जीवन रक्षक सिंचाई (**Life saving irrigation)** करते रहें और नमीं सरक्षण के लिए उचित पुआल जैसे घास-फूस व शेडनेट का भी उपयोग कराते रहें।
2. फलदार पौधे जैसे बील, लसौड़े के फल पककर तैयार हो चुके हैं या होने वाले होगें। अत: उचित आकार के परिपक्व फलों को तोड़कर उनकी अच्छी तरह से ग्रेडिंग-पेकिंग करके स्थानीय बाज़ार, गाँव, मंडी में समय पर बेचकर लाभ लेने की सलाह दी जाती है।
3. इस समय बेर के पौधों की काँट-छांट करने का उपयुक्त समय है। किसान भाई गत वर्ष की बढ़वार का 50% हिस्से तक काँट-छांट (**Prunning**) करें। जो किसान भाई वर्षा ऋतु में बेर का नया बगीचा लगाना चाहते हैं वे इस समय अपने खेत में 6 मीटर **X** 6 मीटर (कतार से कतार और पौधे से पौधे की दूरी) के हिसाब से रेखांकित करके उचित आकार (**2x2x2** फीट) का गड्ढा खोदकर उसे खुला छोड़ दे ताकि इसके अंदर उपस्थित हानिकारक कीट-पतंगें व सूक्ष्म जीवाणु अधिक तापमान के कारण नष्ट हो जाए और वर्षा ऋतु में इनकी भराई करके पोधारोपण करें।
4. गर्मी के मौसम में अधिक तापमान व धूलभरी आंधियों के कारण अनार में माईट (**Mite**) के प्रकोप की अधिक संभावना रहती है। यह कीट पत्तियों के निचले हिस्से से रस चूसता है जिससे पत्तियां सूखकर नीचे गिरने लगती है। इसकी रोकथाम के लिए प्रोपारजाईट (57% **EC**) का 1 मिली।/ली. या स्पाइरीमेसीकेन (240 **SC**) का 0.4 मिली./ली. का पर्णीय छिड़काव 15-20 दिनों के अंतराल में दो बार करें।
5. अभी खजूर के फलों के बढ़वार का समय है और वातावरण का तापमान बढ़ने की संभावना है। अत: खजूर के पेड़ों में नियमित रूप से सिंचाई करते रहें ताकि फलों की अच्छी बढ़वार हो सके और भीषण गर्मी से कोई नुकसान नहीं हो। फलों पर पक्षियों का प्रकोप हो सकता है। अत: किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि फलों को पक्षियों से बचाने के लिए, फल गुच्छों को जाली या एल्डी-मिल्की-यूवी प्लास्टिक बैग (थैला) से ढक दें। परिपक्व फलों को वर्षा के पानी से भारी नुकसान होता है। फलों की परिपक्वता के समय वर्षा के पानी से फलों को भीगने से बचाना अतिआवश्यक है। अत: किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि पेड़ों पर लगे परिपक्व फलों के गुच्छों को उचित प्रकार की प्लास्टिक या अन्य बचाव कवर से ढकने की व्यवस्था रखे। परंतु ध्यान रहे कि प्लास्टिक या बेग का निचला सिरा खुला रहे ताकि फलों को हवा व प्रकाश पर्याप्त मात्रा में मिलते रहें।

6. किसान भाईयों को यह भी सलाह दी जाती है कि जिन्होने अभी तक अपने खेतों की जुताई नही की है, वे इस समय भी अपने खेतों की गहरी जुताई कर सकते है। इसके लिए मिट्टी पलटने वाले हल जैसे-मोल्ड बोल्ड हल, डिस्क प्लाऊ या डिस्क हेरो से 8-10 इंच की गहराई तक जुताई करनी चाहिए ताकि इस समय वातावरण के उच्च तापक्रम के कारण जमीन के अंदर स्थित हानिकारक कीट पतंगों की लट, अंडा, प्युपा व हानिकारक सूक्ष्म जीव आदि संपूर्ण रूप से नष्ट हो जाये। ऐसा करने से मिट्टी की वर्षा जलधारण क्षमता भी बढ़ जाएगी एवं जल, प्रकाश, वायु व तापक्रम का संचरण भी पर्याप्त हो जाएगा जो अगली सब्जी व अन्य फसलों के अच्छे उत्पादन के लिए अनिवार्य है। साथ ही इससे भूमि की भौतिक एवं रासायनिक दशा में भी सुधार होगा और साथ-साथ मिट्टी भी मुलायम व भूरभरी हो जाएगी जो कि अगली फसल की अच्छी पैदावार के लिए बहुत जरूरी है। यह जुताई लवणीय-क्षारीय मृदाओं में सुधार का भी कार्य करेगी।

7. इस समय लगातार कोविड-19 के संक्रमण के चलते किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि अपने खेती कार्य करते समय उचित सामाजिक दूरी (6-7 फीट) बनाए रखें एवं आवश्यक रूप से मूंह व नाक पर उचित प्रकार के मास्क लगाकर रखें। साथ ही अपने हाथों को साबून से समय-समय पर धोते रहें और उचित प्रकार के सेनेटाईजर का भी उपयोग करते रहें। खेत में कार्य करते समय भी अपने मूंह पर मास्क का प्रयोग अवश्य करें तथा किसी भी भीड़-भाड़ वाली जगहों पर अनावश्यक जाने से बचें। इसके साथ ही कृषि कार्यों में उपयोग लिए जाने वाले कृषि औज़ार व मशीन जैसे थ्रेशर, ट्रेक्टर, ट्रोली, हल, स्प्रेयर व अन्य औजारों की सफाई व उचित प्रकार से सेनीटाईजेशन करके ही उपयोग में लेंवें।